कलम दवात की बदौलत

श्रीमती राज चन्द्रा पत्नी डॉ. योगेश चंद्रा (प्रोफेसर)
आई.आई.टी., रूड़की

नये थानेदार साहब हाल ही में बदल कर आये थे। कायदे–कानून के सख्त पाबंद। क्या मजाल कि कोई अपराधी उनकी पैनी निगाह से फिसल जाये। रिश्वत में एक पैसा भी लेना हराम था। पर थाने के पुराने खुर्राट मुंशी जी अब भी यदाकदा जेबें गर्म करने में कुछ हानि नहीं समझते थे। खबरें थानेदार साहब तक भी पहुंचती थी। थानेदार साहब का गुस्से के मारे बुरा हाल था।एक दिन जब शिकायतों की हद हो गयी तो उन्होंने जांच पड़ताल करने की सोची। अपने एक कारिंदे को समझा बुझा कर मुंशी जी के पास भेजा। उसने एक झूठी रपट दर्ज कराकर मुंशी जी की मुठ्ठी में कुछ खोंस दिया। मुंशी जी उड़ती चिड़ियां के पर पहचानते थे, तुरंत खोपड़ी में खतरे की घंटी बजी। वह भांप गये कि कुछ दाल में काला है। मगर आई लक्ष्मी को ठुकराना पाप है। अतः तुरंत मुठ्ठी कस ली। इधर कारिंदा बाहर और पलक झपकते ही थानेदार साहब गालियों की बौछार करते अंदर। आते ही गरजे क्यों बे मुंशी के बच्चे, इतने ठाठ से तू कैसे रहता है ? मुंशी जी ने नम्रमापूर्वक कहा 'हजूर, कलम दवात की बदौलत। सुनकर थानेदार साहब दहाडे' तूने अभी–अभी रिश्वत नहीं ली ?

मुंशी जी ने कहा 'हजूर भाई–बाप हैं, जामा तलाशी ले लें।' मैं अपने मुंह से क्या कहूँ अगर मैनें रिश्वत ली हो तो जो सजा चोर की, सो मेरी। थानेदार साहब के हुक्म से बड़ी गर्मजोशी के साथ पूरी तलाशी ली गई पर कहीं कुछ न मिला। परेशान होकर पूछा "जल्दी बता, तूने रूपये कहां छिपाये हैं ? मुंशी जी का अभयदान दिया गया।" मुंशी जी ने हाथ जोड़कर कहा मेरी रोजी सलामत रहे तथा अपनी मेज पर रखी खाली दवात को उलट कर रूपये निकाल दिये। फिर सिर झुकाकर कहा "आज मेरी जान बच गयी कलम दवात की बदौलत।"

रोटी की कीमत

एक बादशाह ने अपने वजीर को एक स्वामी भक्त अंगरक्षक की नियुक्ति करने का आदेश दिया। आदेश पाते ही वजीर ने कई उम्मीदवार बादशाह के सामने पेश कर दिये। बादशाह ने स्वयं सब उम्मीदवारों का एक–एक करके इण्टरव्यू लिया उसने सबसे एक गंभीर प्रश्न किया कि अगर मेरी और तुम्हारी दाढ़ी में एक साथ आग लग जाये तो तुम क्या करोगे! बादशाह की चापलूसी करके राजपद भोगने के लोभ में तथा सच्चाई जाहिर करके मृत्युदंड भोगने के भय से एक–एक करके लगभग सभी उम्मीदवारों ने बादशाह के सामने हाथ जोड़कर यहीं कहा – गरीब परवर की रक्षा ही हमारी रक्षा है, मालिक से पहले अपनी रक्षा करना तो सिर्फ गद्दारी का नमूना है! पर बादशाह किसी से प्रभावित नहीं हो पाया! अन्त में एक उम्मीदवार रह गया। उससे जब यह प्रश्न पूछा गया तो वह क्षण भर के लिए असमंजस में पड़ गया। एक ओर तो बादशाह के कुपित होने पर काल कोठरी की यातना तथा दूसरी ओर झूठी चापलूसी करके अपनी आत्मा की प्रताड़ना – पर उससे रहा नहीं गया। उसने उत्तर दिया – जान बख्शी जाये जहांपनाह, मैं एक हाथ से आपकी और दूसरे हाथ से अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा! यूं तो सेवक का फर्ज नमक हलाली करना है पर अपनी जान को खतरे में डालकर मालिक की जान बचाना शायद मुमकिन न हो!

बादशाह उसकी सच्चाई से खुश हो गये और उसे अपना अंगरक्षक नियुक्त कर लिया! वजीर के सिवाय सभी दरबारियों के तथा शहजादे के चेहरों पर अप्रसन्नता देख बादशाह ने कहा – यह आदमी सिर्फ सच बोला है, अपने स्वार्थ के साथ तो दूसरों के स्वार्थ की रक्षा हो सकती है पर मात्र रोटी के लिये दूसरों के लिये अपने आप को कुर्बान कर देना आसान नहीं!